श्याम कन्हैया हृदय के समीप है

(भजन रचयिता - डॉ यतेंद्र शर्मा)

यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है।
तेरा तो श्याम कन्हैया हृदय के समीप है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

जीवन में दुःख जो झेला, वह तो अतीत है।
कंचन तप भूषण बने, यही तो जगरीति है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

याद सताये दूर देश की, आँखियों में नीर है।
ये क्या स्वांग पगले, प्रियतम तो संकीर्ण है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

चौथेपन में कदम, दुनिया अभी भी पीय है।
मिठाई मधुमेह में खावे, क्या यती ठीक है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

पलट देख जीवनधारा, क्या तेरे आधीन है।
जब भी चली तेज़ हवा, गिरा तू भू समीप है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

घायल दरद तनमन तब, बैद श्याम धीर है।
अंधकार मिटायो माधव, भई निर्मल पीर है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

निष्ठा केवट पर होतो, नदी धार पर जीत है।
श्याम संग है जब तेरे, सब संकट आधीन है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...

भाग्यवान है कितना तू, मंजू अंशुल प्रीत है।
संगही सच्चे मित्र का, सम संजीवनी बूटी है॥
यती क्यूँ आज इतना अधिक उदासीन है...